महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

अंक-१७

अक्तूबर २०२३

विक्रमी संवत्
२०७९-८०

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री मूलचन्द शर्मा
(माननीय उच्च शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

प्रो. बृज पाल
(कुलसचिव)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र

डॉ. शर्मिला

डॉ. गोविन्द वल्लभ

कवीन्द्रं नौमि वाल्मीकिं यस्य रामायणी कथाम् ।
चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधवः ।।

mvsu.ac.in

ई-मेल – publication@mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

कुलपतेः संदेशः

भारतीय संस्कृतौ शिक्षा पवित्रतमा क्रियामन्यते। भगवता कृष्णेन गीतायां उक्तमस्ति – "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" ज्ञानेन सदृशः लोके किमपि पवित्रं नास्ति महाभारतेऽपि उक्तमस्ति यत्-

"विद्या समं चक्षुर्नास्ति" अर्थात् विद्यासमं नेत्रम् नस्ति। भारतीय-चिन्तनपरम्परायां अज्ञानमन्धतमं मन्यते ज्ञानञ्च प्रकाशमस्ति। शिक्षायाः उद्देश्यम् अज्ञानात् प्रकाशं प्रति गमनस्य प्रक्रिया वर्तते। अस्माकं प्रार्थना वर्तते –

तमसो मा ज्योतिर्गमय असतो मा सद्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय

अज्ञानं मृत्युरस्ति ज्ञानममृतं वर्तते। शिक्षायाः मूलोद्देश्यं ज्ञानस्य प्राप्ति अज्ञानस्य च निवृत्तिः।

भारतीय-दर्शने शिक्षा आध्यात्मिकी प्रकिया अस्ति। जीवनस्य उन्नतेः अधिष्ठानं आध्यात्म एव वर्तते। आत्मनः उन्नतिः आध्यात्म् अस्ति। आत्मनः उन्नकेरभिप्रायः अस्ति प्राणिमात्रे आत्मानुभूति। आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः आध्यात्मिकः मन्यते। आत्मा मन, बुद्धि इन्द्रिय अहंकारादिश्यः भिन्नं वर्तते। आत्मा एव सर्वविधज्ञानस्याधारमस्ति। आत्मनः प्रकाशेन समस्त (सर्वविध) ज्ञानस्य साक्षात्कारं भवति।

शिक्षा मुख्यरुपेण ज्ञानस्य साधना अस्ति। ज्ञानं चेतनायाः विकास वर्तते। शिक्षा चेतनायाः संवर्धनं करोति। विद्या बौद्धिक विकासः अस्ति शिक्षा च आध्यात्मिक विकासोऽस्ति। शिक्षा एव मानवीय-गुणानां विकासः करोति। शिक्षां विना मानवः पशुवत् आचरति। बौद्धिक-उन्नत्या सार्धं यदि आध्यात्मिकम् आधारो न स्यात् तर्हि सः पशुवत् एव व्यवहरति। आध्यात्मिक-उन्नतिः जीवनस्य विकासः च शिक्षया एव भवति। शिक्षायाः अभिप्रायः मानवीय गुणानां संवर्धनमस्ति। भारतीय-संस्कृते आधारः शिक्षा एव अस्ति।

कुलपतिः
महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

सम्पादकीयम्

लौकिकसंस्कृतसाहित्यस्य आदिकवि महर्षि वाल्मीकिः रामायणस्य रचयिता अस्ति। आदिकाव्य रामायणं भारतीय संस्कृतेः आधारं ग्रन्थः मन्यते। वाल्मीकिः न केवलं कविरासीद अपितु सः समाजशास्त्री खगोलशास्त्री अपि च आसीत्। रामचरित्रस्य माध्यमेन तेन समाजे आदर्शपरम्परायाः स्थापना कृता। रामायण-ग्रन्थे न केवलं सामाजिक-परम्परायाः स्थापना वर्तते अपितु परिवारस्य व्यवस्थायाः संरचना अद्यपर्यन्तम् या दृश्यते सा व्यवस्था रामायणाधारितम् एवास्ति।

पारिवारिक-सम्बन्धानां आदर्श-स्वरुपं अत्र विद्यते। भ्रातरं प्रति भातुः सम्बन्धः कथं भवेत्, पुत्रस्य आदर्श-स्वरुपं कथं भवितव्यम् आदर्श मित्रं कथं स्यात्, शत्रुन् प्रति कथं व्यवहार करणीयम् इति सर्वं रामायणे वर्णितं वर्तते।

चतुर्विंशतिः सहस्त्र श्लोकेषु निबद्धं रामायणमधुनाऽपि भारतीय समाजस्य आदर्श-ग्रन्थः अस्ति। प्रश्नोऽयं यत् कः आसीत् वाल्मीकिः ? वाल्मीकि लौकिक साहित्याकाशे आदि कविरस्ति। तस्य हृदये कथं कवित्वं प्रस्फुटमथवत् अस्य विषये उक्तं वर्तते यत् वाल्मीकिः एकदा स्नातुं गन्तुकामः मार्गे सः अपश्यत् यत् एकः क्रौञ्च-कपिलः कामक्रीडायां संलग्नः आसीत् तदैव एकेन व्याधेन तयोः नर पक्षीं व्यापादितः।

करुणापरः मुनेः मुखेन सहसा इदं शब्दं निस्सृतम् यत्-***मा निषाद प्रतिष्ठां त्वंगमः शाश्वती समाः। यत्क्रौञ्च मिथुनादेकंवधीः काममोहितम्।***

एतदाश्चर्यमयं कवि तं दृष्ट्वा तस्य मनसि महाकाव्य रचनायाः आत्मविश्ववासः उत्पन्नोभवत्। तदा नारदमुनेः प्रेरणया सः रामस्य चरित्रं रचितवान्। तद् ग्रन्थमेव आदिकाव्य रामायण इति नाम्ना प्रसिद्ध अभवत्।

अधुनाऽपि अयं ग्रन्थः संस्कृतसाहित्यस्य उपजीव्यकाव्यरुपे अवस्थितंमस्ति। तस्य जीवनमधुना अपि आदर्शरूपे अस्माकं समक्षे दृश्यते। भगवतः रामस्य समकक्षकाले तस्य जीवनमासीत्। वाल्मीकिं-रामायणम् अधिकृत्य समग्रे विश्वे रामकथायाः प्रचलनमभवत्। रामस्य जीवनं धर्मसंस्थापनार्थमेव आसीत्, प्राणिनामार्तनाशाय तस्य प्रादिर्भावोऽभवत्। रामस्य सम्पूर्ण-जीवनं कष्टमयं परम-दुखितानाम् कष्टनिवाराय च व्यतीतम्। वास्तविकरुपेण रामस्य जीवनं सच्चिदानन्द-स्वरुपं वर्तते। रामस्य अर्थः एव ईश्वरः वर्तते। ईश्वरः अर्थात् सत् (शाश्वत) चित् (चेतना) तथा च आनन्द इत्येषां संयोगः। परं लोके रामस्य अभिव्यक्तिः वाल्मीकिना कृतम्। नमः भगवते वाल्मीकये येन लोके रामस्य प्रतिष्ठापना कृता।

सम्पादकः

संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा टीक गांव में चलाया स्वच्छता अभियान

दिनांक 1 अक्टूबर 2023 को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल ने टीक गांव में भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे **"स्वच्छता ही सेवा"** के अन्तर्गत **"एक तारीख एक घंटा"** अभियान में भागीदारी की। इस अवसर पर गांव टीक में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बृजपाल के साथ-साथ विश्वविद्यालय के अधिकारियों, प्राध्यापकों, कर्मचारियों, छात्रों तथा गांव के पंचायत सदस्यों मिलकर गाँव की सफाई की।

विश्वविद्यालय में साइबर क्राइम जागरूकता प्रशिक्षण

12 अक्टूबर को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय कैथल में साइबर क्राइम व आनलाईन धोखाधड़ी से बचने हेतु पुलिस विभाग कैथल के सौजन्य से प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें पुलिस विभाग की ओर से पीएसआई शुभरांशु, एएसआई राजीव व एएसआई कुलवीर उपस्थित हुए। इस अवसर पर पीएसआई शुभरांशु ने बताया कि वर्तमान में साईबर क्राईम से बचने का सबसे बड़ा उपाय जागरूकता है। हमें कभी भी किसी व्यक्ति के साथ अपनी निजी जानकारी जैसे आधार कार्ड नं, पैन नं., बैंक डिटेल, ए.टी.एम. कार्ड/क्रेडिट कार्ड व ऑनलाईन माध्यम से आए ओ.टी.पी. आदि सांझा नही करनी चाहिए। यदि कभी किसी के द्वारा भूल से या धोखाधड़ी से आनलाईन ट्रांजेक्शन होती है तो साईबर हेल्पलाइन नम्बर 1930 पर शिकायत करें। व्हाटसप, फेसबुक, इन्सटाग्राम, ईमेल आदि पर प्राईवेट एवं टू फैक्टर औथेंटिकेशन फैक्टर को हमेशा ऑन करके रखें। नकली आईडी बनने पर, सेक्सुअल ह्रासमेंट से सम्बन्धित धोखाधड़ी से बचने के लिए तुरन्त रिपोर्ट दर्ज कराएं। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अधिकारियों, प्राध्यापकों सहित विद्यार्थियों ने उपस्थिति दर्ज की।

संस्कृत विश्वविद्यालय में नारी शक्ति और स्वदेशी विषय पर आयोजित विशेष व्याख्यान

दिनांक 9 अक्टूबर 2023 महात्मा गांधी जयन्ती के अवसर पर **"वर्तमान सन्दर्भ में स्वदेशी और नारी शक्ति"** विषय पर महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के अस्थाई परिसर डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय में विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो. अर्चना मिश्रा (कुलपति, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, सोनीपत), अध्यक्ष प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज (कुलपति, म. वा. सं. वि.वि. कैथल) रहे।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता प्रो. अर्चना मिश्रा ने कहा कि प्राचीन काल से ही नारी शक्ति ने भारत के विकास में अपना योगदान दिया है। गांधी जी के द्वारा चलाए गए स्वदेशी आन्दोलन में भी महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा वर्तमान में भी भारत की नारी शक्ति शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा, राजनीति और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है। कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने कहा कि गांधी का विचार राष्ट्र के पुनर्जागरण के लिए है, गांधी ने स्वदेशी और महिलाओं के विकास पर विशेष रूप से ध्यान देने की बात की।

गांधी जयन्ती के अवसर पर विश्वविद्यालय में 4-5 अक्टूबर को नारी शक्ति पर आधारित निबन्ध एवं भाषण प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया था। कार्यक्रम में प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों के उत्साह वर्धन हेतु पारितोषिक एवं प्रमाण पत्र भी वितरित किए। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष, आचार्य, शोधच्छात्र एवं विद्यार्थी सम्मिलित रहे। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

द्वि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल में दिनांक 26 से 28 अक्टूबर 2023 तक महर्षि वाल्मीकि जयन्ती महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय में **"महर्षि वाल्मीकि जीवन दर्शन-योगवासिष्ठ के परिप्रेक्ष्य में"** विषय पर द्वि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित योगवासिष्ठ को केन्द्र में रखकर जीवन दर्शन एवं प्रबन्धन से संबन्धित कुल 17 विषयों को चिह्नित किया गया। संगोष्ठी में देश विदेश के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्रतिष्ठित विद्वान एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।

द्वि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन 26 अक्टूबर को किया गया जिसमें मुख्य अतिथि प्रो. ओमनाथ बिमली (दिल्ली विश्वविद्यालय), सारस्वत अतिथि प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय (पूर्व कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली), मुख्य अतिथि प्रो. माधव अधिकारी (कुलसचिव, नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय) तथा अध्यक्ष प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज (कुलपति, म.वा.सं.वि.वि. कैथल) रहे। संगोष्ठी का बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. भारद्वाज ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ का मुख्य उद्देश्य वाल्मीकि द्वारा रचे गए ग्रन्थों पर आधारित शोधकार्यों को बढावा देना है।

शोधपीठ के माध्यम से विश्व भर से योगवासिष्ठ की पाण्डुलिपियों का संकलन कर समालोचनात्मक संस्करण तैयार किया जाएगा। इस अवसर पर संगोष्ठी की स्मारिका का भी विमोचन किया गया। महामण्डलेश्वर स्वामी विरागानन्द गिरी जी (परमार्थ शंकराश्रम, कैथल), प्रो. शिवशंकर मिश्र एवं प्रो. जवाहर लाल (श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय विश्वविद्यालय), प्रो. रघुनाथ नेपाल और डॉ. शिव प्रसाद न्योपोने (नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय) सहित अन्य प्रतिभागी विद्वान एवं शोधार्थी उपस्थित थे।

संस्कृत विश्वविद्यालय एवं नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय के मध्य अकादमिक एमओयू हुआ

उच्च शिक्षा में नवाचार एवं वैश्विक स्तर पर शोध कार्यों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय एवं नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय के बीच दिनांक 27 अक्टूबर 2023 को एमओयू किया जिसके माध्यम से दोनों विश्वविद्यालयों के बीच कार्यशालाएं, संगोष्ठी, सम्मेलन इत्यादि में अकादमिक सहयोग, शिक्षकों एवं छात्रों के आदान-प्रदान के कार्यक्रमों का आयोजन, संयुक्त रूप से शोधकार्य एवं अनेक शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन, विद्यावारिधि (पीएचडी) एवं मास्टर डिग्री के पाठ्यक्रमों के संयुक्त रूप से संचालन जैसे कार्यों की रूपरेखा तैयार की गई। महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बृजपाल एवं नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. माधव अधिकारी ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने कहा कि इस एमओयू के माध्यम से न केवल दो विश्वविद्यालयों अपितु दो देशों के बीच भी शैक्षणिक संबन्ध स्थापित होंगे। इस अवसर पर महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के शैक्षणिक अधिष्ठाता प्रो. भाग सिंह बोदला, कार्यक्रम के संयोजक डॉ. हरीश कुमार, सह-संयोजक डॉ विनय गोपाल त्रिपाठी एवं नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय से डॉ. रघुनाथ नेपाल, डॉ. शिव प्रसाद न्योपोने, श्रीमति रम्भा कुमारी अर्याल उपस्थित रहे।

द्वि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन 27 अक्टूबर को हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल (अधिष्ठाता, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय), विशिष्ट अतिथि प्रो. वी. के. अलंकार (पंजाब विश्वविद्यालय), अध्यक्ष प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज (कुलपति, म.वा.सं.वि.वि. कैथल) उपस्थित रहे।

महर्षि वाल्मीकि जयन्ती के अवसर पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुल पांच सत्रों में 14 शोधपत्रों की प्रस्तुति हुई, जिसमें देश-विदेश के विद्वानों ने प्रतिभागिता की। इस सम्बन्ध में योगवासिष्ठ में वर्णित महत्वपूर्ण 17 विषयों का चयन किया गया था। शीघ्र ही इन शोध पत्रों का प्रकाशन किया जाएगा। कार्यक्रम में प्रो. कुलदीप धीमान (हिन्दू विश्वविद्यालय ऑफ अमेरिका) से ऑनलाइन माध्यम से जुड़े।

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन करते हुए सूचित किया कि विश्वविद्यालय महर्षि वाल्मीकि रचित योगवासिष्ठ पर आधारित ऑनलाइन पाठ्यक्रम का संचालन करेगा। समापन समारोह में विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के साथ कुलसचिव डॉ. बृज पाल सहित प्रो. माधव अधिकारी (कुलसचिव), प्रो. रघुनाथ नेपाल एवं डॉ. शिव प्रसाद न्योपोने (नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय), डॉ ममता त्रिपाठी, डॉ मीनाक्षी (दिल्ली विश्वविद्यालय), डॉ. सुषमा अलंकार (डी. ए. वी. महाविद्यालय, चण्डीगढ़), डॉ रमेश कुमार (श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय) सहित शोधार्थी विद्वान एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।

संस्कृत विश्वविद्यालय ने सर्वसमाज के साथ मिलकर वाल्मीकि जयन्ती का आयोजन किया

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल, बाबा चंचलगिरि वाल्मीकि समाज सेवा ट्रस्ट एवं विश्व हिन्दू परिषद्, कैथल के संयुक्त आयोजन में महर्षि वाल्मीकि जयन्ती पर महर्षि वाल्मीकि धर्मशाला, बाबा चंचलगिरि आश्रम, कैथल में एक जनसभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती सुरभि गर्ग (चेयरपर्सन, नगर परिषद्, कैथल) की रही एवं अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में नगर परिषद् की उपाध्यक्ष श्रीमती सीमा वाल्मीकि एवं अनिल कुमार सौढ़ा उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम प्रातः 9:00 बजे विश्व शान्ति हेतु हवन किया गया जिसमें भगवान वाल्मीकि के निमित्त यज्ञ की आहुति प्रदान की गई। हवन के पश्चात् महर्षि वाल्मीकि पर केन्द्रित संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज रहे। उन्होंने कहा कि कैथल भूमि ने ऋषियों को पैदा किया है। इस भूमि पर महर्षि वाल्मीकि के नाम पर विश्वविद्यालय की स्थापना हरियाणा सरकार ने सोच समझकर उद्देश्य विशेष से की गई है। हम वाल्मीकि के प्रति कृतज्ञ हैं, उन्होंने हमें जीवन और मर्यादा की शिक्षा दी है। हमारे ग्रन्थों में कहीं भी जातिवाद और छुआछूत नहीं है। राष्ट्र विरोधियों द्वारा सोची समझी साजिश के तहत समाज को जाति के आधार पर तोड़ने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, छात्र एवं सर्वसमाज के प्रमुख लोग उपस्थित रहे।

नव निर्मित नवकुण्डों की प्राण प्रतिष्ठा

दुर्गाष्टमी के शुभ अवसर पर महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय कैथल के टीक परिसर में सर्वार्थ सिद्ध योग में विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप में कुलपति प्रो. रमेश भारद्वाज के नेतृत्व में नव निर्मित नवकुण्डों की यज्ञशाला में प्राण प्रतिष्ठा व जागृति हेतु पूजन व यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य वेद व कर्मकाण्ड के विद्यार्थियों का प्रायोगिक अध्ययन, वैदिक धर्म का प्रचार करना होगा।

मेरा गांव रोहेडा

रोहेरा हरियाणा राज्य के कैथल जिले की राजौंद तहसील का एक प्राचीन गाँव है। हमारा गाँव जिला मुख्यालय कैथल से दक्षिण की ओर 29 किमी, राजौंद से 9 किमी., खीरी सिंबल वाली (3 किमी), किठाना (4 किमी), गुलियाना (5 किमी), सांगरी (6 किमी), राजौंद (6 किमी) रोहेडा के नजदीकी गांव हैं। रोहेडा दक्षिण में अलेवा तहसील, पश्चिम में कलायत तहसील, पूर्व में असंध तहसील, उत्तर में चीका तहसील से घिरा हुआ है। यह स्थान कैथल जिले और जींद जिले की सीमाओं पर स्थित है। असंध, कैथल, जींद, नरवाना रोहेडा के नजदीकी शहर हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार गांव रोहेडा की कुल आबादी लगभग 7382 है। यहां पर पुरुषों की संख्या 3987 तथा महिलाएं 3395 हैं।

गाँव का 300 वर्ष का इतिहास - गांव के बुजुर्ग बताते हैं कि लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व कुडुं गौत्र के बुजुर्ग घोघडिया गांव से यहां आकर बसे थे। उन्हीं में से एक महिला ने एक बच्चे को जन्म दिया था जिसका नाम लखबीर रखा गया था। कहा जाता है कि उस बच्चे के साथ उस महिला ने एक सांप को भी अपनी कोख से जन्म दिया था उस महिला ने सांप का पालन-पोषण भी अपने बालक की भांति किया था। भाद्र मास की चतुर्थ तिथि के दिन वह महिला खेतों में काम करने के लिये गई हुई थी कि इसी बीच उस महिला का भाई अचानक गांव में आया और अपनी बहन को घर पर न पाकर वह खेतों में चला गया। खेतों में पहुँचने पर उसने देखा की उसके भाँजे के पालने में सांप सो रहा है। उसने भाँजे की जान का खतरा जानकर उस सांप को मार डाला तभी सांप के मरते ही उसका भाँजा भी मर गया। यह देखकर महिला आग बबुला हो गई तथा उसने रोते हुए अपने भाई से कहा कि तुने सांप के साथ ही मेरे बेटे की भी हत्या कर दी है तथा भविष्य में कभी मेरे घर मत आना क्योंकि इस दिन तुम्हे मेरे घर का अन्न जल नही दिया जाएगा। तब से लेकर आज तक जब भी कोई सांप किसी व्यक्ति को काट लेता है तो कुडुं गोत्र के लोग किसी भी मेहमान व भिखारी को भोजन नही देते उसी दिन से कुडुं गोत्र में यह परंम्परा है कि कोई भी व्यक्ति सांप को नही मारेगा।

ऐसी मान्यता हे कि यहां पर सांप के काटने पर कुडूं गोत्र के व्यक्ति कि मौत नही होती है। यदि कोई सांप किसी भी व्यक्ति को काट भी लेता है तो उसे घर पे ही जमीन पर लेटाकर महिलाओं द्वारा गीत गाकर उसका इलाज किया जाता है। ठीक होने पर उसे नागदेवता के मन्दिर ले जाकर उसे नागदेव के दर्शन करवाए जाते हैं। गांव के सरपंच बताते हैं कि 300 वर्षों का इतिहास साक्षी है कि गांव मे सांप के काटने से किसी की भी मृत्यु नही हुई है। गाँव में परंपरा बनी है की भाद्र मास के दिनों में कोई भी सांप को नही मारेगा। नाग देवता के मन्दिर पर हर 3 वर्ष पश्चात भाद्र मास की पंचम को विशाल भण्डारे का आयोजन किया जाता है।

शिक्षण संस्थान- हमारे गाँव में दो सरकारी एवं तीन गैर-सरकारी विद्यालय हैं जिसका लाभ गाँव के विद्यार्थियों के साथ साथ आस-पास के गाँवों के विद्यार्थियों को भी मिलता है। गाँव के अतिरिक्त अनेक ऐसे विद्यालय एवं महाविद्यालय हैं जिनमें विद्यार्थी अध्ययन के लिए जाते हैं। जिनका वर्णन इस प्रकार से है-

महाविद्यालय- हमारे गाँव के समीप (1) शिव शंकर कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन, (कसान रोड़) जाखौली, (2) सी. टी. आर. ग्लोब कॉलेज (कैथल रोड़), सौंग्ल, (3) सी. टी. आर. ग्लोब कॉलेज ऑफ प्राईवेट आई. टी. आई (कैथल रोड़), सौंग्ल, (4) आर. एस. डी. गैलेक्सी कॉलेज (कैथल रोड़), सौंग्ल, (5) अमरनाथ भगत जयराम के. एम. वी. सेरधा, (माजरा रोड़) महाविद्यालय स्थित हैं।

विद्यालय- गाँव के समीप (1) राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रोहेडा, (2) सर् छोटू राम विद्यालय, रोहेडा, (3) गौरव हाई स्कूल, रोहेडा (4) सरस्वती हाई स्कूल, रोहेडा (5) गीता मिडल स्कूल, रोहेडा विद्यालय स्थित हैं।

कृषि - गांव के लोगों का जीवन कृषि व्यवस्था पर आधारित होता है। हमारे गांव के चारो ओर से खेतों से घिरा हुआ है जिस कारण गाँव का वातावरण शुद्ध एवं स्वच्छ रहता है। खेतों में सब्जियां तथा अनाज उगाया जाता है। गांव में खेती के अलावा पशुपालन, मुर्गीपालन और मधुमक्खी पालन आदि व्यवसाय किये जाते हैं।

धार्मिक स्थल- हमारे गांव में लगभग सभी धर्मों के लोग प्रेम एवं सदभावना के साथ रहते है। गांव में भगवान शिव का प्राचीन मन्दिर, हनुमान मन्दिर, दादा खेडा, रविदास मन्दिर, गोगा मेडी, बाबा बालक नाथ का मन्दिर तथा लिछा भाई की समाधि आदि है जहाँ ग्रामीण प्रति-दिन पूजा अर्चना करते हैं। समय-समय पर धार्मिक मान्यताओं एवं त्योहारों के उपलक्ष्य में मेलों का आयोजन करते है तथा होली, बैसाखी, दशहरा, दीपावली आदि त्योहारों को बड़ी धूम-धाम से मिल-जुल कर मनाते है।

सार्वजनिक सुविधाएँ - हमारे गांव में एक चिकित्सा केन्द्र तथा पशुओं की देखभाल के लिए एक पशु अस्पताल भी है। यहां पर ग्रामीण बैंक व पेट्रोल पम्प की सुविधा भी है। जिससे गांव के लोगों को शहर नही जाना पडता जिससे गांव के लोगों की समय की बचत होती है। शहरों की भांति अब गांवों में भी हर प्रकार की सुविधाएं है। रोहेडा गांव में भी हर प्रकार की सुविधा है जैसे - बिजली, मोबाइल, कम्पयूटर, पक्की सडक, पानी के नल, आदि। यहां के किसान लोग आधुनिक कृषि यन्त्रों का भी प्रयोग करने लगे हैं। अब हल, बैल के स्थान पर खेतों की जुताई अधिकतर ट्रैक्टरों से की जाती हैं। गांव की सभी गलियां पक्की कर दी गई हैं।

पूनम देवी (आचार्य साहित्य)

आधुनिक युग में कैसा हो स्त्री का स्वरूप?

भारतीय परिवेश में वैदिक युग से मध्ययुगीन भारत से आधुनिक युग तक जब हम महिलाओं की स्थिति की बात करते हैं तो हर युग में महिलाएं विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए, उनसे जूझते हुए, अपने कौशल, कुशल व्यवहार, सूझबूझ, शौर्य, त्याग और बलिदान की भावनाओं के साथ अपना रास्ता तय करती आई है। एक विलक्षण भाव जो प्रकृति में केवल और केवल स्त्रीतत्व के भाग्य में है वो है 'मातृत्व भाव' के बल पर हमेशा चुनौतियों का डटकर सामना करती आई हैं। एक समय था जब माता सीता, अनुसूया, गार्गी, सावित्री जैसी भव्य व्यक्तित्व वालीं, दार्शनिक, साहसी महिलाओं ने समाज में अपने किरदार से हर वर्ग और अलग-अलग परिवेश की महिलाओं और पुरुषों के सामने भी आदर्श स्थापित किए। उनके समक्ष भी देवी स्वरूप में मां दुर्गा, मां पार्वती, मां लक्ष्मी, मां सरस्वती, मां गंगा के रूप में महिला देवी स्वरूपों ने प्राचीन युगों-युगों से लेकर आज तक हमारे सामने हर परिस्थिति में न्याय संगत, नीति संगत, प्रेरणा स्त्रोत बन, मातृत्व भाव को जागृत रखते हुए क्षमा, ज्ञान, विकास करते हुए, दुखों और दुष्टों का संहार की परिणति तय की।

विचारों के अलग-अलग संप्रेक्षण से, बदलती धार्मिक आस्थाओं और विकसित होते-होते कुछ तो ऐसा हुआ जिसने महिलाओं को तुच्छ, अबला, बेचारी, अशिक्षित, कुलटा और अमर्यादित बना दिया।इसलिए स्त्री विमर्श तो जरूरी है। महिला के स्वरूप की चर्चा भी जरूरी है। लेकिन आधुनिक युग में स्त्री विमर्श केवल चंद लेखिकाओं के इशारे पर चलने वाला अभियान नहीं होना चाहिए। जब मैं स्त्री के विषय में सोचती हूं तो अपने आप को उन महिलाओं के साथ भी खड़ा नहीं पाती जो शनि शिंगणापुर मंदिर में समानता की आड़ में प्राचीन धार्मिक महत्व को लांघ कर पूजा का अधिकार चाहती थी। इसके विपरीत मैं उन महिलाओं के साथ भी स्त्री विमर्श पर अपने आप को खड़ा नहीं पाती जहां मर्यादित जीवन में स्वतंत्र जीवन की कल्पना करते हुए महिलाओं को कुछ धार्मिक और सामाजिक बंधनों में बांधते हुए महिला को इंसान नहीं समझा जाता। मैं आधुनिक युग की युवा महिला हूं। मुझ पर शहरी व ग्रामीण, पुरातन व नवीन स्त्री चिंतन के विचार की एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

हमारे समाज में मुख्य रूप से दो तरह की महिलाएं हैं - शहरी जिनमें शिक्षित और बड़े सपने संजोए बैठी महिलाएं हैं और दूसरा वर्ग है घरेलू महिलाओं का। उनको भी आगे दो-दो वर्गों में हम बांट सकते हैं। एक शहरी महिलाएं जो कामकाजी हैं। स्वाभिमानी, सक्षम, साहसी, शिक्षित हैं। दूसरी शहरी हो कर भी घरेलू हैं। यह शिक्षित भी हैं, स्वाभिमानी भी हैं, पर इनका संसार परिवार के सदस्य हैं। दूसरे तरह की महिलाओं का एक बड़ा वर्ग है जो है ग्रामीण कामकाजी महिलाएं, वह परिवार और समाज के मकड़जाल में उलझी हैं। शिक्षित और सक्षम होते हुए भी कुछ रूढ़िवाद से पीड़ित हैं। एक बड़ा तबका ग्रामीण परिवेश की घरेलू महिलाओं का है। इसलिए ए.सी. हॉल में बैठकर स्त्री चिंतन की बात करना न्याय संगत मुझे नहीं लगता। उन सब महिलाओं की कुछ समस्याएं एक समान है कुछ भिन्न है। इसीलिए इन महिलाओं के स्वरूप की भी अलग-अलग बात होनी चाहिए और इन के लिए स्त्री विमर्श भी अलग-अलग होना चाहिए। क्योंकि आज भी भारत के अनेक राज्यों में जैसे मध्यप्रदेश में मैला ढोने की प्रथा लागू है। बड़े परिवारों के यहां मेला ढोने का कार्य निम्न जाति की महिलाएं करती हैं। अगर वह ऐसा करने से मना करती हैं तो वह गांव से निकाल दी जाती हैं या फिर दमनकारी पुरुषों का शिकार बनती हैं।

एक तरफ निर्भया जैसी लड़की जो डॉक्टर बनने के सपने संजोए, दिल्ली जैसे मेट्रोपॉलिटन शहर में शाम के समय फिल्म देखने के बाद अपने घर ही नहीं पहुंच पाती। वहीं भारत के बाहर ग्रह युद्ध हो या दो देशों के बीच की लड़ाई या आतंकवाद के शिकार हुए परिवारों की बात करूं तो सबसे ज्यादा युद्धों में या आतंकवाद की शिकार बने अफगानिस्तान, सीरिया, इजरायल या रशिया की महिलाएं हों युद्धों का भुगतान महिलाओं और बच्चों को झेलना पड़ा है। इसलिए स्त्री विमर्श आधुनिक समय में आज के वर्तमान काल में बहुत आवश्यक है।

आज महिलाओं और पुरुष दोनों को ही समझना और बदलना होगा आधुनिक समय में बढ़ते मीडिया और सोशल मीडिया के चलन में जहां ग़लत नैरेटिव बड़ी आसानी से बनाये जा रहे हैं। अपनी अस्मिता की रक्षा करते हुए हर महिला को अपने परिवार की महिलाओं की और समाज में अन्य बेटियों की भी रक्षा करनी है। हमें अपने अंदर इस मातृत्व भाव को भी जगाना होगा।जिस तरह झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अपने बच्चे को पीठ पर बांधकर अपनी व बच्चे की रक्षा करते हुए अंग्रेजों से टक्कर ली थी।उसी तरह आज के सोशल मीडिया, रील, टिक-टॉक, इंस्टाग्राम के जहर और मायाजाल के तिलिस्म से खुद को बचाते हुए अपनी बेटियों को भी बचाने की लड़ाई लड़नी होगी। समाज को जागरूक करना होगा।
अपने अंदर लीडरशिप गुणों का विकास करना होगा। जब तक हम अपनी बात को सही ढंग से सही, समय पर कहना नहीं सीखेंगे तो परिवार में महिलाओं के महत्व को समझा नहीं पाएंगे।

लीडरशिप और डोमिनेंस में अंतर समझते हुए महिलाओं को अपने व्यक्तित्व निर्माण के लिए भी कार्य करना चाहिए ताकि जिजा बाई,लक्ष्मी बाई, यशोधरा, माता सुलखनी, माता सुशील जैसी महिला बन हम राष्ट्र निर्माण और समाज निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकें।

आज की महिलाओं को सही को सही और गलत को गलत कहने की ताकत जुटानी होगी। महिलाओं को मातृत्व के भाव को हमेशा जीवित रखना चाहिए। मातृत्व सृजन का प्रतीक है। क्षमा भाव के साथ-साथ चंड-मुंड संघारिणी का भाव भी अपने अंदर समाहित करके चलना होगा। शिक्षा, कानून, अधिकारों और कर्तव्यों का ज्ञान अर्जित करना होगा। जागरूकता की अलख जगानी होगी। परिवार और समाज की बेटियों की रक्षा करने की अलख जगानी होगी।

मेरा मानना है कि महिला, महिला की साथी है, सच्ची साथी। बस अगर इसमें से पुरुष तत्व को हटा दिया जाए। एक महिला दूसरी महिला से पुरुषों के नज़रिए से बना रिश्ता निभाती है। यानी माँ -बेटी, सास- बहु, देवरानी-जेठानी, ननद-भाभी आदि सभी रिश्ते तभी है जब इनमें एक पुरुष का अस्तित्व कायम है। जिस दिन स्त्री ने स्त्री से निज जाति का रिश्ता, स्त्रीत्व का रिश्ता निभाना शुरू किया उस दिन से राम राज्य स्थापित होना शुरू हो जाएगा। मेरे अनुसार यही वर्तमान युग में नारी का स्वरूप होना चाहिए।

पुरुष को पुरुष हम महिलाएं बनाती हैं। बचपन से उसमें लड़के होने का भाव हम डालती हैं। जवानी में युवा मदमस्त होने का भाव भी हम महिलाएं ही पैदा करती हैं। एक स्त्री का पति कैसा हो यह सास बन हम महिलाएं ही उसे समझाती हैं। यानी आज का समाज जैसा है वो हमने ही बनाया है। इसलिए राम राज्य या वैदिक युग वापिस लाना भी हमारे हाथ में है।

नेहा धवन (एम.ए. हिन्दू अध्ययन)

प्रश्नमञ्जरी

(१) ऋग्वेद के कथा सूत्रों में किस विष्णु अवतार की कथा आयी हैं-
(क) कूर्म (ख) वामन (ग) नरसिंह (घ) मत्स्य

(२) अमरकोश के अनुसार 'हरि' शब्द के अर्थ हैं-
(क) 16 (ख) 20 (ग) 24 (घ) 09

(३) संस्कृत धातुओं का विभाजन कितने पदों में होता है-
(क) 07 (ख) 03 (ग) 13 (घ) 05

(४) कुमारसंभव के किस सर्ग में शिव-पार्वती के विवाह का वर्णन है -
(क) 05 (ख) 06 (ग) 07 (घ) 08

(४) कौटिल्य अर्थशास्त्र कितने अध्यायों में विभक्त हैं-
(क) 125 (ख) 200 (ग) 150 (घ) 175

(६) चाणक्य सूत्रों की संख्या है -
(क) 1000 (ख) 180 (ग) 6000 (घ) 571

(७) 'खिल' पाठ किस से सम्बन्धित है-
(क) धर्मशास्त्र (ख) न्यायशास्त्र (ग) व्याकरणशास्त्र (घ) कामशास्त्र

(८) भासकृत प्रतिमा नाटकम् की कथा किस पर आधारित है।
(क) महाभारत (ख) पौराणिक (ग) रामायण (घ) लौकि

(९) भगवत् गीता का 'विभूति योग' नाम से प्रसिद्ध अध्याय है-
(क) 18 वाँ (ख) 10 वाँ (ग) 12 वाँ (घ) चतुर्थ

(१०) कौटिल्य ने अपने पूर्वकालीन कितने आचार्यो का उल्लेख किया है-
(क) 20 (ख) 14 (ग) 25 (घ) 18

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(पोडशद्दशङ्कस्य उत्तराणि)

(1) नागार्जुन (2) श्रीमद्भागवत पुराण (3) भागवत (4) आयुर्वेद (5) कालिदास
(6) 15 (7) आर्य सिद्धान्त (8) सामवेद (9) माता (10) शिष्य

सुभाषितानि

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥

अपने से ज्येष्ठों (बड़ों) का सदा आदर, अभिवादन और उनकी संगति करने से मनुष्य की चार चीजें- आयु, विद्या, यश, बल की वृद्धि होती है और वह प्रसन्न रहता है।

वर्तमान-युगे नारीणां स्थितिः

एतद् सत्यमस्ति यद् वैदिककाले, स्मृतिकाले, रामायण-महाभारत काले च नारीणां स्थितिः अतीव गौरवास्पदम् आसीत्। सा गृहिणी, गृहस्वामिनी, परिवार-कल्याणकारिणी चासीत्। 'जायेदस्तम्' जाया व गृहं मन्यते स्म।

'सम्राज्ञी प्रशुरे भवः'

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'

यत्र नारीणां पूजनं सम्मानं च क्रियते, तत्र देवानां निवासः। ताभ्यः उच्चशिक्षायाः प्रविधानम् आसीत्। परं मध्यकाले तासां स्थितिः दयनीया समभवत्। ताः गृहकार्यपराः दासीवत् समभवन्। प्रायशः एक-शताब्दी पूर्वं नारी-स्वातन्त्र्यस्य स्वायत्रतायश्च आन्दोलनं प्रारब्धम्। एतस्य आन्दोलनस्य प्रवर्तकाः मुख्यत्वेन सन्ति-स्वामी दयानन्दः सरस्वती, राजा राममोहनरायः, महात्मा गान्धी, रवीन्द्रनाथ ठाकुरप्रभृतयः। एते प्रगतिशील-विचारधारायाः समर्थका आसन्। नार्यः सुशिक्षिताः स्युः, समाजे तासां स्थानम् आदरास्पदं भवेत्, तासु अन्धविश्वासादयः कुप्रवृत्तय निरस्ता भवेयुः, तासु जागरणं स्यात्। ताः गृहकार्येण सममेव बाह्यकार्येषु, शिक्षा-क्षेत्रे, व्यापारक्षेत्रे अन्येषु शिल्प-कलादि-कार्येषु च दक्षा भवेयुः। एतेषां महापुरुषाणां प्रयत्नेन सती-प्रथा, बहुविवाह-प्रथा, बाल-विवाह-प्रथा प्रभृतयः कुप्रथाः समाप्त प्राया एव।

साम्प्रतं स्त्री-शिक्षा प्रतिदिनं वर्धते एव प्रतिवर्षं सहस्त्रशो नार्ये ज्ञान-विज्ञान-कला संकाये उत्कृष्टोपाधिभिर्विभूष्यन्ते। नारी-समाजे सत्यामपि जागरुकतायां समाजे दुष्प्रवृत्तेः प्रभावेण दहेज-प्रथा, अपहरण-बलात्कारादि-समस्या न निरोधं प्राप्नुवन्ति एषां निराकरणाय सामाजिकम् आन्दोलनं सर्वथा अपेक्ष्यते। वर्तमानसमाजे नारीषु तादृशी जागृतिर्न संलक्ष्यते।

रजनी देवी

(एम.ए. हिन्दू अध्ययन)